# Quadrant II – Transcript and Related Materials

**Programme:** Bachelor of Arts (first Year)

**Subject:** Hindi

**Paper Code:** HNC :102

**Paper Title:** आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य एवं व्याकरण

**Unit:** 01

**Module Name: 'प्रत्यय' भाग 2**

**Module No: 32**

**Name of the Presenter:** Ms.Priyanka Joshilkar

---

**Notes**

**तद्धित प्रत्यय**

संज्ञा,सर्वनाम और विशेषण के अंत में लगनेवाले प्रत्यय को 'तद्धित' कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितांत'। दूसरे शब्दों में – धातुओं को छोड़कर अन्य शब्दों में लगनेवाले प्रत्ययों को तद्धित कहते हैं। जब संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अंत में प्रत्यय लगते है, उन शब्दों को तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

**उदाहरण**

- मानव+ता = मानवता
- अपना+पन =अपनापन
- कृत प्रत्यय क्रिया या धातु के अंत में लगता है,जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा,सर्वनाम और विशेषण के अंत में। तद्धित और कृत प्रत्यय में यही अंतर है।

**तद्धित प्रत्यय के भेद**

- **कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय**
- **भाववाचक तद्धित प्रत्यय**
- **संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय**
- **गुणवाचक/गणनावाचक तद्धित प्रत्यय**
- **स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय**

- **ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय**

**कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय**

जिन प्रत्यय को जोड़ने से कार्य को करनेवाले का बोध हो उसे कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहते है अर्थात जो प्रत्यय संज्ञा,सर्वनाम तथा विशेषण के साथ मिलकर करनेवाले का या कर्तुवाचक शब्द को बताते हैं उसे कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय कहते है। दूसरे शब्दों में- कर्ता का बोध कराने वाले प्रत्यय **कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय** कहलाते है।

**उदाहरण**

जुआ + आरी = जुआरी

पान + वाला = पानवाला

**भाववाचक तद्धित प्रत्यय**

इस प्रत्यय में भाव प्रकट होता है। इसमें प्रत्यय लगने की वजह से कहीं-कहीं पर आदि स्वर की वृद्धि हो जाया करती है। जो प्रत्यय संज्ञा तथा विशेषण के साथ जुड़कर भाववाचक संज्ञा को बनाते है उसे **भाववाचक तद्धित प्रत्यय** कहते है। दूसरे शब्दों में भाव का बोध कराने वाले प्रत्यय **भाववाचक तद्धित प्रत्यय** कहलाते है।

**उदाहरण**

संज्ञा के अंत में आ, आई, आन, आरा,त,ती,,पन,पा,स इत्यादि तद्धित प्रत्यय लगाकर भाववाचकतद्धितांत संज्ञाएं बनाई जाती हैं।

बुलाव+ आ=बुलावा

छूट +आरा = छुटकारा

**संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय**

जिन प्रत्ययों के लगने से संबंध का पता लगता है, उसे **संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय** कहते है।

सरल शब्दों में- संबंध का बोध कराने वाले प्रत्यय **संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय** कहलाते है।

संज्ञा के अंत में आल,हाल,ए,औती, इत्यादि प्रत्यय लगाकर संबंधवाचक तद्धितांत संज्ञाएं बनायी जाती हैं।

**उदाहरण**

ससुर+ आल = ससुराल

चाचा + ऐरा = चचेरा

**गुणवाचक/गणनावाचक तद्धित प्रत्यय**

जिन प्रत्ययों को जोड़ने से शब्दों में संख्या का पता चले उसे **गुणवाचक/गणनावाचक तद्धित प्रत्यय** कहते है। सरल शब्दों में- संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को **गुणवाचक/गणनावाचक तद्धित प्रत्यय** कहते है। संज्ञा पदों के अंत में आ,रा,ला, इक,था,वाँ इत्यादि तद्धित प्रत्यय लगाकर गुणवाचक तद्धितांत संज्ञाएं बनती हैं।

**उदाहरण**

मीठ + आ= मीठा

इतिहास + इक = ऐतिहासिक

**स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय**

जिन प्रत्ययों के प्रयोग से स्थान का पता चलता है, वहाँ पर **स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय** होता है। सरल शब्दों में स्थान का बोध कराने वाले प्रत्यय **स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय** कहलाते है। संज्ञा के अंत में ई,वाला, इया, इत्यादि तद्धित प्रत्यय लगाकर स्थानवाचक तद्धितांत संज्ञाएं बनती हैं।

**उदाहरण**

जर्मन + ई= जर्मनी

चाय + वाला = चायवाला

**ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय**

जिन प्रत्यय शब्दों से लघुता,हीनता,प्रियता का पता चलता हो उसे **ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय** कहते है। दूसरे शब्दों में ऊनवाचक संज्ञाओं से वस्तु के लघुता,हीनता,प्रियता इत्यादि के भाव व्यक्त होते हों उसे **ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय** कहते है। संज्ञा के अंत में आ,ई, इया, ओला, री,ली,सा इत्यादि प्रत्ययों को लगाकर **ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय** बनते है।

**उदाहरण**

ढोल + क = ढोलक

खाट + इया = खटिया